ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

सोनीपत जिले की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत

राकेश कुमार
संगीत प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (3560), गोहाना, सोनीपत हरियाणा

हरि की धरती हरियाणा है जहाँ भगवान का आना हुआ। कुछ विद्वान हरि का सम्बन्ध भगवान श्री कृष्ण से जोड़ते है और कुछ इसे "हर" अर्थात् भगवान शंकर से। कोई इसे आर्यों का आदि स्थान होने से "आर्याना" का बिगड़ा रूप हरियाणा मानते हैं तो कुछ आभिरों का आदिस्थल होने से अभिरायण का बिगड़ा रूप अहिरायण से ही हरियाणा की उत्पत्ति मानते हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉक्टर जदुनाथ सरकार का यह मत है कि इस प्रदेश का नाम यहाँ कि हरियाली से सम्बन्धित है। यहाँ पर वर्षा होने पर चारों तरफ हरियाली छा जाती है जो कि हरित आरण्यक का रूप प्रदान करती है। सम्भवतः इसी गुण के कारण इस प्रदेश का नाम हरियाणा पड़ा।

सोनीपत जिले का गठन :–

पहले यह पंजाब का हिस्सा था। मार्च 1966 में उच्चतम न्यायलय के माननीय न्यायमूर्ति श्री जे. सी. शाह की अध्यक्षता में पंजाब सीमा आयोग गठित किया गया। आयोग द्वारा सीमांकन के उपरान्त सितम्बर 1966 में संसद ने पंजाब पुनर्गठन एक्ट पारित किया गया। जिस के फलस्वरूप मंगलवार 1 नवम्बर 1966 को पंजाब राज्य का विभाजन सम्पन्न हुआ तथा हरियाणा राज्य अस्तित्व में आया। जिस समय हरियाणा राज्य बना उस समय सात जिले जीन्द, गुडगाँव, हिसार, करनाल, महेन्द्रगढ़, रोहतक, अम्बाला बनाए गए थे। इसके बाद 22 दिसम्बर 1972 को जिला सोनीपत तथा भिवानी बनें।

सोनीपत जिला 2260 वर्ग कि॰मी॰ में फैला हुआ है। इसके पूर्व में उत्तरप्रदेश, दक्षिण–पूर्व में दिल्ली राज्य, दक्षिण में झज्जर व रोहतक तथा पश्चिम में जीन्द और उत्तर में पानीपत जिला स्थित है। यह जिला हरियाणा के मध्य–पूर्व में स्थित है। सेनीपत का प्रचीन नाम सोनप्रस्थ था। प्राचीन लोककथाओं के अनुसार सोनीपत उन पाँच पतों में से एक था, जिनकी माँग महाराजा युद्धिष्ठिर ने दुर्योधन से की थी। यहाँ पर रामायण काल में श्रवण कुमार भी अपने माता–पिता के साथ आए थे, ऐसी भी मान्यता है।

लोगों के मनोरंजन का साधन :–

प्रचीन काल से संगीत मनुष्य के भाव प्रकट करने का तथा मनोरंजन का साधन रहा है। मनुष्य ने जैसे–जैसे विकास किया, उसके विकास के साथ–साथ उसने अपने मनोरंजन के साधनों की खोज की। वही साधन, तरीके या यूं कह सकते है वो कलाऐं धीरे–धीरे उस क्षेत्र विशेष में जनमानुष में प्रसिद्ध होती चली गई और वही मनोरंजन के साधन, तरीके या कलाऐं कालान्तर में उस क्षेत्र विशेष की लोक कलाऐं कही जाने लगी।

सोनीपत जिले में यहाँ के लोगों के प्राचीन मनोरंजन के साधन साँग, रामलीला, भंडेले, बारा

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

मण की धोबन (एक प्रकार का तमाशा), बंदर–बांदरी का खेल, साँप और सपेरे का खेल, भालू का खेल, नट–बादी का खेल, मिट्टी से कलाकृतियॉ बनाना, मिट्टी के खिलौने बनाना आदि रहे हैं। यहाँ की लोक संगीत परम्परा गायन में साँग, रागनी, आल्हा, बहरे–तबील, सामण, सोहनी, राँझा, भादुआ, कातक, चमोले, नहयालदे आदि गायन शैली का प्रयोग होता रहा है। वादन–में साँग की बजाई तथा अन्य गीतों के लिए वादन शैली अलग प्रकार से होती है। लोक नृत्यों में साँग की नृत्य शैली अलग प्रकार की होती है। विवाह–शादियों में घोड़ी नृत्य, बीन–बासली नृत्य, खोड़िया नृत्य एक अलग अंदाज में किया जाता हैं। छट्टी नृत्य तथा फागण नृत्य, महिलाओं द्वारा किया जाता है और धमाल नृत्य में स्त्री–पुरूषों का नृत्य तथा खेढ़ा नृत्य का अंदाज एक अलग प्रकार का रहता है।

सोनीपत की सांस्कृतिक विरासत बड़ी ही समृद्ध है। यहाँ की धरती ने ऐसे महान कलाकारों को जन्म दिया है, यहाँ के कलाकारों ने भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में हरियाणा का गौरव बढ़ाया है।

जिला सोनीपत के सुप्रसिद्ध कलाकार :–

सूर्यकवि पं॰ लख्मीचन्द :– इनका जन्म सोनीपत जिले के जाटी कलां गाँव में 1903 को हुआ था। ये अनपढ़ थे। इन्होंने साँग की गायकी गाँव बसोदी निवासी सांगी मानसिंह से सिखी। इनको हरियाणा का 'शेक्सपीयर', 'सूर्यकवि' तथा हरियाणा का 'कालिदास' भी कहा जाता है। इन्होंने 20 से अधिक सांगों की रचना की। जिनमें से प्रमुख है :–

- नौटंकी
- शाही लकडहारा
- राजा भोज
- चंद्रकिरण
- हीर–राँझा
- चाप सिँह
- नल–दमयंती
- सत्यवान सावित्री
- मीराबाई
- पद्मावत
- सेठ ताराचन्द
- पूरन भगत

शिष्य परम्परा :–

इनके शिष्यों की लम्बी सूची है, जिन्होनें 'सांग कला' को समर्पित भाव से आगे बढ़ाया। इनके शिष्य पं॰ माँगे राम जो कि गाँव पाणची जिला सोनीपत से सम्बन्धित थे, जिन्होंने साँग कला को एक नया आयाम दिया। पं॰ मांगेराम के इलावा इनके शिष्यों में पं॰ रामचन्द्र, पं॰ रतिराम, पं॰ माईचन्द, पं॰ सुल्तान, पं॰ चन्दन लाल, पं॰ राम स्वरूप, फौजी मेहर सिँह, सरूप, तुगल, हरबख्श, चन्दगी आदि शिष्यों ने इनका नाम खूब रोशन किया। इनके पुत्र श्री तुलेराम जी तथा वर्तमान में श्री विष्णु दत्त जी (पौत्र) भी इनकी इस संगीत प्रणाली को आगे बढ़ा रहें हैं। इनकी संगीत प्रणाली में महासिंह–हवासिंह गाँव पढ़ाना से तथा सत्ता कथूरवाल गाँव कथुरा से भी प्रमुख साँगी हुए है।

मृत्यु – इनका निधन 1945 मे हुआ था, जिसके बाद में हरियाणा साहित्य अकादमी ने लख्मीचन्द ग्रंथावली प्रकाशित की।

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

पं॰ माँगेराम :– इनका जन्म 5 अप्रैल 1905 में गाँव सिसाना जिला सोनीपत में हुआ। इनके नानाजी ने इनको गोद ले लिया था। जिस कारण इनका गाँव पाणची जिला सोनीपत में आना हुआ। इनके गुरू पं॰ लख्मीचन्द जी थे। इन्होंने 1962 मे 'गंर्धव सभा' का गठन किया। जिसमें उस समय के पाँच प्रमुख साँगी– पं॰ मांगे राम, पं॰ सुल्तान सिँह, धनपत सिँह, रामकिशन व्यास और चन्द्रबादी शामिल थे। गंर्धव सभा ने हरियाणा के कई स्थानों पर अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए और साँग कला का प्रचार–प्रसार किया। इन्होंनें 40 सांगों की रचना की। इसके इलावा इन्होंनें अनेकों भक्तिभाव, सामाजिक, राजनीतिक आदि विषयों पर भी रचनाऐं की।

शिष्य परम्परा :–

इनके शिष्य प्रणाली में जय नारायण गाँव कुराड़ से, उनका शिष्य लख्मी गाँव भम्भेवा से, उनका शिष्य मदनलाल गाँव नौल्था से, उनका शिष्य टेका नाई गाँव नयाबास से उनका शिष्य कृष्ण साँगी गाँव कथूरा से प्रमुख है।

मृत्यु :– ये 16 नवम्बर 1967 को गढ़मुक्तेश्वर में गंगा घाट पर बुद्धकथा गाते हुए इस संसार से कूच कर गए।

बाजे भगतः– इनका जन्म 16 जुलाई 1898 को सोनीपत जिले के गाँव सिसाना में हुआ। इनके गुरू हरदेव सांगी थे। ये एक साहित्यकार, कवि तथा सांग कलाकार थे। इन्होंने पं॰ लख्मीचन्द के साथ काम किया। इन्होंने 15 से 20 सांगों की रचनाएं की। इनके शिष्यों में खिम्मा सांगी गाँव गौरड़ निवासी का नाम प्रमुख है। आगे चलकर खिम्मा के शिष्य 'प्यारा और हुसारा' गाँव सिलाण ा निवासी प्रसिद्ध साँगी हुए। खिम्मा साँगी के पुत्र महावीर ने भी इस परम्परा को आगे बढ़ाया है।

मृत्युः– इनकी मृत्यु 26 फरवरी 1939 को हुई।

शहीद कवि फौजी मेहर सिँह :– इनका जन्म 15 फरवरी 1918 को गाँव बरोणा तहसील खरखौदा जिला सोनीपत में एक जाट परिवार में हुआ। इन्होनें 1936 में भारतीय सेना में नौकरी शुरू की। इनके फौजी जीवन का इनकी लेखनी पर इतना प्रभाव था कि इन्होंने फौजी जिन्दगी को आधार बनाकर अनेक रचनाऐं की। इन्होंने इसके अलावा मिलन, विरह, सुख–दुख सहित कृषक जीवन तथा सुभाषचन्द्र बोस पर भी खूब लिखा।

मृत्यु :– सन् 1945 रंगून में इनकों वीर गति प्राप्त हुई।

सोनीपत जिले के प्रसिद्ध साँगी :–

सोनीपत जिले के प्रसिद्ध साँगीयों में पं॰ जगननाथ गाँव हसनपूर कुराड़, राजकिशन अगवानपूरिया, बलवान सिँह धोरी गाँव बुटाना, साँगी बेदू गुंडा गाँव नैणा, सांगी बनवारी गाँव मदीना जिला सोनीपत, कर्मवीर–बलबीर गाँव वजीरपुरा गोहाना आदि के नाम प्रमुख है।

सोनीपत जिले के अन्य प्रसिद्ध कलाकार :–

पालेराम और मांगेराम (मुरली) गाँव सरगथल इन्होने पं॰ मागेराम के साथ कार्य किया। सेवा साँगी

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

गाँव गोरड़बखेला, झम्मन नगाड़ा वादक गाँव ससाण ा, रमजान खाँ, सारंगी वादक गाँव सोटी, (झम्मन खाँ गाँव मंडोरा, नानक ढ़ोलकिया मुण्डलाना, धनपत सागी के साथ काम किया) सूरजभान बीन बादक सोनीपत, राम कुवार और बालकिशन गाँव जुआँ आदि के नाम प्रमुख है।

सोनीपत जिले के साँग के लेखक रू–

साँग से सम्बन्धित लोक लेखकों में सोनीपत जिले के सूर्यकवि पं॰ लख्मीचन्द, दीपचन्द, पं॰ माँगेराम, बाजे भगत, फौजी मेहर सिहँ, भरतू जाट इसराना, प्यारेलाल मुण्डलाना, रामस्वरूप सिटावली आदि के नाम प्रमुख है।

सोनीपत जिले के रागनी गायक :–

सोनीपत जिले के प्रमुख रागनी गायकों में मा॰ सतबीर गाँव भैंसवाल कलाँ, पाले हलालपूरिया, सरीता चौधरी, रणबीर बडवासनिया, पासी, नीलम चौधरी, प्रेम देहाती आदि के नाम प्रमुख हैं।

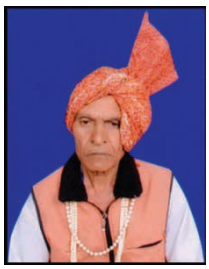

मास्टर धन सिँह :– आपका जन्म सन् 1942 में गॉव गढ़ी उजाले खाँ गोहाना में हुआ। आपके पिता श्री माल्हेराम जी, बासली, बीन, जौगिया सारंगी बजाते थे तथा शब्द गायन करते थे। आपके दादा श्री ज्ञासन तथा आपके पिता माल्हेराम जी को गाँवों में जब पशुओ में बिमारी आ जाती थी तब राँझा गाने के लिए बुलाया जाता था। (राँझा गायन एक प्रकार की लोक गायन शैली हैं जो कि पशुओं को बिमारी से बचाने के लिए हरियाणा में गाई जाती है)। आपका संगीतमय माहौल में लालन–पालन हुआ। आप एक सुप्रसिद्ध बीनवादक हैं। आपने शास्त्रीय संगीत सोनीपत के श्री चमनलाल भास्कर जी से सीखा और बीन वादन गुरू सरदारा नाथ जी गाँव बलाण ा निवासी से सिखा। आप शास्त्रीय गायन, तबला, हारमोनियम, बैंजो वादन, रागनी गायन तथा लेखन कार्य मे सिद्धहस्त हैं। संगीत में आपके योगदान को देखते हुए हरियाणा सरकार ने आपको पं॰ लख्मीचन्द अवार्ड से सम्मानित किया हैं। आप हरियाणा के सभी बड़े कलाकारों के साथ काम कर चुके हैं। देश–विदेशों में विभिन्न मंचों पर आप अपनी प्रस्तुति दे चुके हैं। आपके परिवार में आपके बच्चे तथा आपके शिष्य संगीत कला को आगे बढ़ा रहे है।

चमन लाल भास्करः– आप शास्त्रीय संगीत जगत के प्रसिद्ध विद्वान थे। आपके गुरू का नाम बनवारी लाल था। आप शास्त्रीय गायन, वालियन तथा तबला वाद्य यन्त्र के ज्ञाता थे। आपने सोनीपत जिले के साथ–साथ पूरे हरियाणा में शास्त्रीय संगीत का प्रचार प्रसार किया। आपके शिष्य आज हरियाणा के इलावा दूसरे राज्यों में भी अच्छे पदों पर कार्य कर रहे हैं।

मास्टर प्रकाश :– आपने सोनीपत मे शास्त्रीय गायन, तबला, वालियन तथा ढ़ोलक का प्रचार प्रसार किया। आज आपके अनेकों शिष्य आपकी संगीत प्रणाली को आगे बढ़ा रहे हैं।

लोक वाद्य मन्त्र :–

सोनीपत जिले के लोक वाद्य यन्त्रों मे बीन, बासली, ढ़ोलक, नगाड़ा, तासा, डेरू, झाँझ, मजीरा, खिंजरी, ढ़ोल, तुम्बा, इकतारा, दौतारा (दूतारा) सांरगी,

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

जौगिया सांरगी, घड़वा, हारमोनियम, क्लारनेट, चिमटा, खड़ताल, आदि मुख्य रूप से बजाए जाते हैं।

संक्षेप में हम कह सकते है कि सोनीपत जिले की लोककला तथा यहाँ की संस्कृति इतनी समृद्ध हैं, जिसने हरियाणा की लोककला व संस्कृति को मजबूती, उन्नति तथा समृद्धि प्रदान की है।

संदर्भ ग्रन्थो की सूची –

1. सम्बंधित जानकारी हरियाणा के विभिन्न कलाकारों से बातचीत करके तथा श्री सुलेख कुमार जी D.I.G, लोक सम्पर्क विभाग सोनीपत तथा उनकी टीम के सहयोग से प्राप्त की गई हैं।
2. कुछ तथ्यो की जानकारी गुगल पर प्राप्त कलाकारों की जीवनीयों से प्राप्त की गई है।
3. कुछ जानकारियों के लिए कलाकारों द्वारा गाई गई रागनियों का भी सहारा किया गया है।
4. कुछ तथ्यों की जानकारी अरिहन्त हरियाणा सामान्य ज्ञान तथा श्री कृष्णा हरियाणा सामान्य ज्ञान नामक पुस्तकों से भी ली गई हैं।